जन्माष्टमी की विशेष साधनाएँ

ब्रह्मा, महेश, इन्द्र आदि प्रधान देवगण जिनके श्रीचरण कमलों में पूर्ण अनुराग सहित नम्र भाव से अपने मणिमय मुकुटों को स्पर्श कराते हुए वन्दना करते हैं, ऐसे नव-नटनागर भगवान श्रीकृष्ण ने निज भक्तों को भवसागर से पार करने के लिये ही लोक-विलक्षण अद्‌भुत दिव्य मंगल-विग्रह धारण किया था। वे अनन्त, अचिन्त्य तथा स्वभाव से ही ज्ञान, ऐश्वर्य, कारुण्य, वात्सल्य, दया, सौन्दर्य, माधुर्य आदि कल्याण गुणों के सागर हैं। आप सच्चिदानन्द स्वरूप अनन्त और अचिन्त्य स्वाभाविक शक्ति वैभव का आश्रयकर असीम आनन्द प्रदान करते हैं। आप जो कुछ करना चाहते हैं, उसे कोई जान नहीं सकता। आप प्राणिमात्र में सौहार्द रखते हुए सकल वस्तु जात पर अपनी सत्ता रखते हैं। आपकी अनेक लीलाएं ऐसी हैं, जिनमें मनुष्य की विचार-शक्ति सर्वथा स्थगित हो जाती है, आप ही जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कारण हैं। आपके चरणारविन्द मुमुक्षु जनों की प्राप्ति का स्थान तथा निरीह जनों की भावना का एकमात्र विषय है। वेदान्त के द्वारा ही आपकी किसी प्रकार अवगति हो सकती है। श्री ब्रह्माजी के अपने चारों मुखों से प्रार्थना करने पर ही ब्रजजनों के प्राण-प्रिय, सबके अन्तर्यामी और नियन्ता, उज्जवल रसस्वरूप, रमाकान्त श्रीनन्द नन्दन का प्रादुर्भाव पृथ्वी का भार उतारने के लिये श्री वसुदेवजी की धर्मपत्नी देवकी जी के गर्भ से हुआ था। आज भी भगवान श्री कृष्ण के जन्म दिवस को बड़ी ही धूम-धाम से पूरे देश में ही नहीं वरन् विदेशों में भी मनाया जाता है। इस रात्रि विशेष में व्यक्ति चाहे तो अपना भाग्य बदल सकता है, अपनी समस्त अधूरी इच्छाओं को पूर्ण कर सकता है, क्योंकि यही तो वह दिन है जब भगवान श्री कृष्ण अपने भक्तों पर कृपा करने को अवतरित हुए थे, यही तो वह दिन है जब भगवान श्रीकृष्ण स्वयं अपने भक्तों को ढूंढ-ढूंढकर उनका उद्धार करते हैं, उनका कल्याण करते हैं। फिर भला इस पावन अवसर पर आप क्यों पीछे रहें। उन्हें प्रसन्न करने के लिये उनकी

विभिन्न साधनाओं को सम्पन्न करें और भर लें अपनी सूनी झोली को।

श्रीकृष्ण का अवतरण इस धरा पर प्रेम, ज्ञान, कर्म और योग का विशेष संदेश लेकर उपस्थित हुआ। इस दिन जो महान् घटना घटित हुई वह अपने आप में विशेष मुहूर्त्त बन गया। इस रात्रि को संकल्प कर कोई भी साधना की जाये तो वह पूर्ण सफल होती ही है, क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण ने जीवन की सारी क्रियाएं एक मानव की भांति करते हुए हर कार्य में संघर्ष किया और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त की। उन्होंने अपने जीवन की क्रियाओं द्वारा ही आने वाले युग को संदेश दिया, इसलिये श्रीकृष्ण पूर्ण पुरुष योगेश्वर और जगत् गुरु हैं। इसीलिये उनकी साधना करने वाला कोई भी शिष्य या भक्त अपूर्ण तो रह ही नही सकता।

कृष्ण के नाम से आज समस्त विश्व परिचित है, शायद ही ऐसा कोई व्यक्तित्व होगा जो श्री कृष्ण से परिचित न हो। जन-मानस में जो कृष्ण की छवि है, वह उन्हें ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित करती है और उनके ईश्वर होने से अथवा उनमें 'ईश्वरत्व' के होने से इन्कार भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि इन कलाओं का आरम्भ ही अपने आप में ईश्वर होने की पहचान है। और फिर श्रीकृष्ण तो सोलह कलाओ से पूर्ण हैं।

जन्माष्टमी के दिन कृष्ण पूजन सामान्य विधि से तो सभी करते हैं, लेकिन मांत्रोक्त विशेष साधना करने से कार्य में विशेष सफलता प्राप्त होती है। साधकों को चाहिए कि वे पूरे परिवार के साथ कृष्ण पूजन तो अवश्य करें लेकिन उसके साथ ही मांत्रोक्त साधना भी करें। अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग प्रकार की साधनाएं आवश्यक है।

जन्माष्टमी की रात्रि को संकल्प लेकर किसी भी शुक्रवार को यह साधनाएं संपन्न की जा सकती है। कृष्ण साधना का मूल मंत्र 'ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा' है। इस मंत्र का जप करने से पहले मांत्रोक्त विधि से संकल्प, न्यास इत्यादि करना आवश्यक है।

सबसे पहले अपने दाहिनें हाथ में जल लेकर कृष्ण पूजन में दिया गया संकल्प करें। गुरू पूजन गणपति पूजन करें और उसके पश्चात् ऋषिन्यास, अंगन्यास, मंत्रन्यास संपन्न करें। कृष्ण की सभी साधनाओं में यह न्यास विधि समान रहेगी।

1. वाक् सिद्धि एवं मेधासिद्धि साधना-

आज के युग में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वही सफलता प्राप्त कर पाता है जो बोलने में चतुर हो, चपल हो और सही समय पर सही निर्णय लेने में सक्षम हो। इस प्रतिस्पर्धा के युग में वही सफल जीवन प्राप्त कर सकता है जो वाकपटु हो, जिसके पास वाकसिद्ध हो, जिसके पास मेधासिद्धि हो। यदि आप भी मेधा सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं, वाक् सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिये।

साधना विधान-

1. यह साधना प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में ही संपन्न की जाती है।
2. स्नान इत्यादि कर ऊपर दिये गये न्यास विधि से न्यास संपन्न करें।
3. अब पूर्व दिशा की ओर मुँह करके कपड़े के आसन पर बैठें तथा अपने सामने लकड़ी का बाजोट रखें।
4. बाजोट पर सफेद कपड़ा बिछाकर एक थाली स्थापित करें।
5. अब थाली के मध्य में कुंकुम या केशर से 'श्री कृष्णा' लिखें।
6. इसके बाद चावलों की एक ढ़ैरी थाली के मध्य में लगायें तथा इस ढ़ैरी पर 'कृष्ण यंत्र' स्थापित कर दें।
7. अब इस यंत्र का अक्षत, कुंकुम, गुलाल इत्यादि से षोडशोपचार पूजन करें।
8. इसके पश्चात् निम्न ध्यान मंत्र 'कृष्ण का विग्रह अथवा चित्र' अपने सामने रख कर करें।

वामोर्ध्व-हस्ते दधतं, विद्या-सर्वस्व-पुस्तकम्। अक्ष मालां च दक्षोर्ध्वे, स्फटिकी मातृका मयीम्।। शब्द ब्रह्म मयं वेणुमधः पाणि द्वयेरितम्। गायन्तं पीत वसनं, श्यामलं कोमलच्छविम्।। वहिवर्ह कृतोत्तंसे, सर्वज्ञां सर्व वेदिभिः। उपसितं मुनि गणैरूप तिष्ठे द्वरिं सदा।।

अर्थ-चतुर्भुज हरि अपने बाएं ऊपरी हाथ में 'विद्या-सर्वस्व-पुस्तक', दाएं ऊपरी हाथ में मातृका वर्णमयी और स्फटिक की बनी 'अक्षमाला' नीचे के दोनों हाथों में शब्द-ब्रह्ममयी 'वंशी' लिए है। वे पीताम्बर धारी, श्याम वर्ण और कोमल शरीर तथा शिर पर मोर पंख से विभूषित है। सभी वेदों के जानने वाले सर्व ज्ञाता मुनियों द्वारा उनकी उपासना की जाती है। ऐसी मनोहर मूर्ति श्रीकृष्ण को मैं नमन करता हूं।

9. इसके पश्चात् 'स्फटिक माला' से निम्न मंत्र का जप ग्यारह माला करें और नित्य प्रति एक माला मंत्र जप अवश्य करें-

मंत्र-।। ऐं क्लीं कृष्णाय ह्रीं गोपी-जन-वल्लभाय स्वाहा सौः।।

10. इस प्रकार इक्कीस दिन तक साधना करने से साधक को बुद्धिवृद्धि, ज्ञानवृद्धि, मेधावृद्धि और दूरदृष्टि प्राप्त होती है। ऐसे साधक का वचन कभी मिथ्या नहीं जाता है।

11. साधना के पश्चात् यंत्र को अपने पूजा घर में स्थापित कर दें। चावल चिड़ियों को डाल दें। अन्य सामग्री किसी जलाशय में विसर्जित कर दें। आप चाहें तो यंत्र को भी विसर्जित कर सकते हैं।

साधना सामग्री न्यौछावर 1151 रू.

2. गृहस्थ सुख प्राप्ति प्रयोग-

सामग्री- श्री कृष्ण वशीकरण विग्रह, आकर्षण माला।

यदि प्रेम में सफलता प्राप्त नहीं हो रही हो, विवाह में विलम्ब हो रहा हो, गृहस्थ जीवन में तनाव रहता हो तो इन सभी स्थितियों में यह प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिये।

साधना विधान-

1. यह आवश्यक नहीं है कि यह साधना जन्माष्टमी के दिन ही प्रारम्भ की जाये। किसी भी शुक्रवार को यह प्रयोग आरम्भ किया जा सकता है।
2. प्रातःकाल स्नान आदि करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
3. सफेद वस्त्र पहनें तथा पूर्व दिशा की ओर मुख करके अपने सामने लकड़ी का एक बाजोट लगायें।
4. इस बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछायें तथा इस पर एक थाली रखें।
5. अब इस थाली में अपने सम्मुख ''श्री कृष्ण वशीकरण विग्रह'' स्थापित करें। यदि कृष्ण एवं रुकमणी का चित्र प्राप्त हो सकें तो उसे भी स्थापित करें। इस मंत्र द्वारा ध्यान करें-

वरदाभय हस्वाभ्यां, श्लिष्यन्तं स्वांग प्रिये।
पद्मोत्पल करे तथ्यां, श्लिष्टं चक्र गदोज्ज्वलम्।।

वर और अभयमुद्रा युक्त और अपने हाथों में चक्र गदाधारी भगवान श्रीकृष्ण प्रिया रूकमणी के साथ विराजमान है, उन भगवान श्रीकृष्ण और रूकमणी का ध्यान करते हुए मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे जीवन में भी ऐसी ही प्रेम वर्षा हो।

6. फिर ''आकर्षण माला'' से निम्न मंत्र का जप सम्पन्न करें। यह मंत्र ग्यारह माला चार शुक्रवार तक करना अनिवार्य है।

।। श्रीं ह्रीं क्लीं गोपी-जन-वल्लाभाय स्वाहा क्लीं ह्रीं श्रीं।।

7. इस प्रकार चार शुक्रवार को यह साधना सम्पन्न कर विग्रह को अपने पास ही रखें और माला स्वयं धारण कर लें। विवाह संबंधित बाधायें तो इस साधना से दूर होती ही है इसके अलावा सम्मोहन एवं आकर्षण भी प्राप्त होता है।

साधना सामग्री न्यौछावर 1151 रू

3. कामना पूर्ति कृष्ण साधना-

यह भगवान कृष्ण की प्रिय साधनाओं में से एक है। इस साधना को सम्पन्न कर भगवान श्री कृष्ण से मनचाहा वरदान प्राप्त किया जा सकता है। अपने जीवन की कोई भी समस्या हो उससे मुक्ति पायी जा सकती है और जो भी कामना हो उसे पूर्ण रूप दिया जा सकता है। बस एक बार, श्री कृष्ण के प्रसन्न होने की बात है। अपनी इच्छाओं की पूर्ति चाहते हैं तो आपको यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिये।

साधना विधान-

1. यह साधना जन्माष्टमी के दिन सम्पन्न करें। प्रातःकाल जल्दी उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
2. इसके पश्चात् पूर्व दिशा की ओर मुख करके कुश के या कपड़े के आसन पर बैठें।

3. अपने सामने लकड़ी का एक बाजोट लगायें तथा उस पर पीला वस्त्र बिछाएँ।

4. अब इस पर एक थाली रखें तथा शुद्ध घी का एक दीपक भी जलायें।
5. अब थाली में कुंकुम से रंगे हुए कुछ चावल बिखेर दें तथा थाली में श्रीकृष्ण चित्र, 'कृष्ण यंत्र' स्थापित कर उसका पूजन करें और निम्न ध्यान मंत्र से दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण वंदन करें।

ध्यान-

कलाय कुसुम श्यामं, वृन्दावन गतं हरिम्।
गोप गोपी गवावीतं, पीत वस्त्र युगावृतम्।।
नानालंकार सुभगं, कौस्तुभाद्भसि वक्षसम्।
सनकादि मुनि श्रेष्ठ, संस्तुतं परया मुदा।।
शंख चक्र लसद् बाहुं, वेणु हस्त द्वयेरितम्।

अर्थ- कलायें पुष्प जैसे सुन्दर वर्ण, वृन्दावन धाम से विराजमान, गोप-गोपियों और गौ इत्यादि से वेष्ठित पीताम्बरधारी भगवान श्रीकृष्ण जो विभिन्न आभूषणों से शोभायमान हैं, जिनका वक्षस्थल कौस्तुभ मणि से प्रकाशित है, सनकादि श्रेष्ठ मुनि उनकी स्तुति कर रहे हैं, श्रीकृष्ण के एक हाथ में शंख और दूसरे में चक्र हैं और अन्य दो हाथों से बंसी वादन कर रहे हैं, ऐसे मनोहर रूप भगवान श्रीकृष्ण को मैं नमन करता हूँ।

6. उसके पश्चात् 'मणिमाला' से निम्न दो मंत्रों का जप करें। दोनों मंत्रों की पांच-पांच माला मंत्र जप आवश्यक हैं-

प्रथम मंत्र-।। क्लीं हृषीकेशाय नमः।।
द्वितीय मंत्र-।। श्री ह्रीं क्लीं कृष्णाय स्वाहा।।

इस साधना के प्रारंभ में अपनी तीन मनोकामनाएं मन ही मन बोल दें अथवा कागज पर लिख कर 'मनोकामना पूर्ति हेतु कृष्ण यंत्र- के नीचे रख दें और ग्यारह दिन तक रोज दोनों मंत्रों की एक एक माला का जप अवश्य करें। चालीस दिन बीतते बीतते एक मनोकामना अवश्य ही पूर्ण हो सकती है।

साधना सामग्री न्यौछावर 1151 रू.

4. आकर्षण-वशीकरण प्रयोग-

सामग्री- तांत्रोक्त नारियल, रूद्राक्ष, सम्मोहन माला।

समय बड़ा खराब चल रहा है, कोई किसी का नहीं है। बिना स्वार्थ के

साधना विधान-

1. यह रात्रि कालीन एक दिन का प्रयोग है, जन्माष्टमी के दिन या किसी भी गुरुवार के दिन इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है।
2. जिस दिन प्रयोग करना हो उस दिन साधक स्वस्थ व प्रसन्नचित्त होकर स्नान आदि से निवृत्त होकर, पीले वस्त्र धारण करें।
3. पीले आसन पर, पीली धोती और दुपट्टा ओढ़ कर बैठ जायें, तथा सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछायें।
4. किसी प्लेट में कुंकुंम से पांच बिन्दियां बनाकर उसे बाजोट पर रखें। प्लेट में 'तांत्रोक्त नारियल' को स्थापित कर दें और कुंकुंम से उस पर चार बिन्दियाँ लगायें।
5. इसके पश्चात् नारियल के पास चावल की ढ़ेरी बनाकर उस पर 'रूद्राक्ष' को स्थापित कर दें। इसके बाद अक्षत, पुष्प, धूप आदि दिखाकर पूजन करें और पांच मिनट तक किसी भी बिन्दु पर एकाग्रचित्त होकर त्राटक करें।
6. तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर अपने नाम व पिता का नाम, शहर, स्थान आदि का उच्चारण कर अपनी मनोकामना को पूरी करने का संकल्प करें, और फिर जल को जमीन पर छोड़ दें।
7. इसके बाद 'सम्मोहन माला' से निम्न मंत्र का आसन पर बैठ 11 माला जप करें।

मन्त्र- ॐ क्रीं कल्क्यै क्रीं फट्

8. प्रयोग समाप्ति के बाद रात्रि में ही या अगले दिन साधना -सामग्री को किसी एकान्त स्थान में घर से दूर ले जाकर जमीन में गाढ़ दें, या नदी/कुएँ में इसे विसर्जित कर दें।

इस प्रयोग की समाप्ति के 30 दिन पश्चात आप स्वयं में एक विशेष परिवर्तन अनुभव करने लग जायेंगे और आपके व्यक्तित्व में पहले से अधिक निखार आने लगेगा तथा आप एक दृढ़ एवं प्रखर व्यक्तित्व के स्वामी बन सकेंगे।

जन्माष्टमी के पावन अवसर पर आप भी उपरोक्त साधनाओं को सम्पन्न कर अपने जीवन में खुशहाली ला सकते हैं, अपनी अतृप्त इच्छाओं को पूर्ण कर सकते हैं।

साधना सामग्री न्यौछावर 751 रू.

5. सुदर्शन प्रयोग शत्रु बाधा के लिये-

यह अत्यंत उच्चकोटि का प्रयोग है और कहते हैं कि आज तक केवल गिने-चुने योगी ही इस प्रयोग को संपन्न कर सफलता प्राप्त कर पाये हैं। यह प्रयोग अत्यंत ही तीक्ष्ण, प्रभावकारी एवं तीव्र है।

जो जीवन में शत्रुओं से परेशान हों, दुश्मनों ने उसका जीना हराम कर दिया हो, उनके सामने सिर झुकाना पड़ता हो या मुकदमों अथवा रोगों से जूझते हुए जर्जर हो गए हों, तो यह प्रयोग अत्यंत ही लाभकारी सिद्ध होता है।

शब्दों में इस बात को बताना संभव नहीं, पर फिर भी इतना कहना पर्याप्त है, कि जिस दिन से व्यक्ति इस साधना को प्रारंभ करता है, उसी क्षण से उसे अनुकूल प्रभाव प्राप्त होने लग जाता है।

साधना सिद्ध होने पर व्यक्ति का व्यक्तित्व ही परिवर्तित हो जाता है, उसके चेहरे पर इतना तेज व्याप्त हो जाता है, कि सामने वाला व्यक्ति देखते ही समर्पण की मुद्रा में आ जाता है। वह सभी मुकदमों में विजित होता है, शत्रु खुद गिड़गिड़ा कर उसके पैरों में पड़ जाता है और समझौता कर लेता है। समर भूमि में ऐसा व्यक्ति महाकाल के समान शत्रुओं का दमन करने वाला होता है, परंतु वह खुद सुदर्शन चक्र रूपी विद्युतीय कवच से आबद्ध रहता है, इसलिए शत्रु के अस्त्र-शस्त्र उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाते।

रोग तो ऐसे साधक के जीवन को स्पर्श भी नहीं कर सकते और वह स्वस्थ, आरोग्य जीवन जीता हुआ समाज में मान-सम्मान का अधिकारी होता है।

साधना विधान-

1. जन्माष्टमी की रात्रि या किसी भी शुक्रवार को रात्रि 11 बजे के बाद स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र धारण करने चाहिए।
2. अब पूर्व दिशा की ओर मुख करके कुश के या फिर कपड़े के आसन पर बैठें।
3. अपने सामने लकड़ी का एक बाजोट लगाये और उस पर सफेद वस्त्र बिछायें। अब बाजोट पर एक थाली स्थापित करें तथा उसमें कुंकुम या केशर से रंगे हुए कुछ चावल बिखेर दें।
4. अब थाली में 'सुदर्शन चक्र यंत्र' को स्थापित करें और फिर उसका पंचोपचार पूजन करें।
5. उसके बाद यंत्र के दाहिनी ओर 'सुदर्शन तरंग गुटिका' को स्थापित करें। गुटिका का भी लघु पूजन करने के उपरांत 'विजयदर्शिनी माला' से निम्न मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप करें- मंत्र-

।। ॐ सुदर्शन चक्राय मम सर्व कार्य विजयं देहि देहि ॐ फट्।।

6. यह ग्यारह दिन की साधना है। साधक को पूर्वाभिमुख होकर बैठना चाहिए, प्रतिदिन एक ही समय पर साधना प्रारंभ करें। ब्रह्मचर्य, अक्रोध आदि का पालन आवश्यक है।
7. साधना समाप्त करने के उपरांत 'सुदर्शन तरंग गुटिका' को अपने शरीर के ऊपर से घुमा कर दक्षिण दिशा में अपने घर से दूर फेंक दें। यंत्र व माला को लाल कपड़े पर पूजा कक्ष में स्थापित कर दें और 21 दिनों के बाद उसे भी किसी नदी या सरोवर में विसर्जित कर दें।

ऐसा करने से यह साधना सिद्ध हो जाती है, जिसके उपरांत व्यक्ति हर क्षेत्र में विजय प्राप्त करता है और जीवन में किसी भी क्षेत्र में उसे पराजय का मुंह नहीं

नहीं हुए।

साधना सामग्री न्यौछावर 1151 रू.

6. अक्षुण्ण लक्ष्मी साधना प्रयोग-

यह प्रयोग अत्यंत गुप्त है और शायद ही किसी योगी को इसका ज्ञान हो। श्रीयंत्र स्थायी-लक्ष्मी के लिए श्रेष्ठ माना जाता है, पारदेश्वरी लक्ष्मी भी इस विषय में अत्यंत लाभकारी है, परंतु अक्षुण्ण लक्ष्मी साधना प्रयोग इनका भी सिरमौर है, क्योंकि जो व्यक्ति इस साधना को संपन्न कर लेता है, चाहे उसने दरिद्र के घर में ही जन्म लिया हो, चाहे ब्रह्मा ने उसके भाग्य में सात जन्मों के लिए दरिद्रता ही क्यों न लिखा दी हो, वह जीवन में तीव्र गति से उन्नति की ओर गतिशील होता जाता है, धन स्वतः ही उसकी ओर खिंचा चला आता है और उसके घर में षोड्श लक्ष्मी चिर निवास करती है।

इस साधना को संपन्न करने के बाद कृष्ण तीनों लोकों के अधिपति बन सके और उस युग में उनके समान संपत्तिवान् शायद ही कोई व्यक्ति हुआ हो।

साधना विधान-

1. यह साधना जन्माष्टमी या किसी भी बुधवार से प्रारंभ की जानी चाहिए।
2. साधक को रात्रि 10 बजे के बाद स्नान कर पीत वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुख कर पीले आसन पर बैठना चाहिए।
3. अपने सामने पीले वस्त्र से ढके बाजोट पर 'अक्षुण्ण लक्ष्मी महायंत्र' स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन करना चाहिए।
4. फिर 'त्रिलोक संपत्ति मुद्रिका' को यंत्र के वाम (बायें) भाग की ओर स्थापित कर उसका भी संक्षिप्त पूजन करना चाहिए।
5. उसके उपरांत साधक को 'धनवर्षिणी माला' से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप संपन्न करना चाहिए।

मंत्र-।। ॐ अक्षणा त्रैलोक्य सम्पदा प्रात्यर्थं हुं हुं फट्।।

6. यह साधना सात दिनों की है, जिसके उपरांत व्यक्ति को 13 दिन तक यंत्र, माला तथा मुद्रिका को पूजा स्थान में रख देना चाहिए।
7. फिर 13 दिन के बाद मुद्रिका, माला व यंत्र को जल में प्रवाहित कर देना चाहिए।

ऐसा करने से साधना में सफलता प्राप्त होती है और रही अनुभव की बात, तो वह आप स्वयं देख सकते हैं।

साधना सामग्री न्यौछावर 1151 रू.

7. सूर्य सम्मोहन साधना-

एक बार कृष्ण गुरू सांदीपन के चरण दबा रहे थे, कि अचानक जंगल की ओर से एक हिरण दौड़ता हुआ उस ओर आ पहुंचा। उसके पीछे-पीछे विशाल व्याघ्र था, जिसके शरीर में साक्षात् यम ही मानो उस हिरण को लीलने के लिए व्यग्र था। परंतु अचानक यह क्या...गुरू सांदीपन के प्रभाव क्षेत्र अर्थात् उनके आश्रम में आते ही व्याघ्र अपनी हिंसा भूल कर परस्पर क्रीड़ा करने लगे। कृष्ण तो मानो कुछ क्षण के लिए स्तब्ध हो देखते ही रह गए। पूछने पर गुरू सांदीपन ने बताया-यह सब 'सूर्य सम्मोहन साधना' से ही संभव हो सका है। किसी भी जीव को उसकी प्रकृति के विपरीत कर देना कोई सरल कार्य नहीं है, अपितु दुष्कर कार्य है।

फिर उन्होंने कहा-'कृष्ण! तुम्हें अपने जीवन में अनेक विपरीत परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा, जब समस्त लोग तुम्हारे खिलाफ हो जायेंगे, अतः यह साधना तुम्हें संपन्न करनी ही है, जिससे कि तुम सबको अपने अनुकूल बनाने में समर्थ हो सकोगे।'

इसके बाद सांदीपन ने कृष्ण को यह साधना संपन्न कराई, जिसके बलबूते पर जीवंत वस्तुएं तो क्या, जड़ वस्तुएं भी उनके आकर्षण पाश में बंध जाती थीं। एक बार जो उन्हें देखता था, बस देखता ही रह जाता था और कभी उनकी इच्छा के विपरीत कार्य नहीं कर पाता था। गोपियां तो कृष्ण के प्रेम में पागल ही हो गई थीं।

साधना विधान-

1. यह साधना 11 दिनों की है जिसे जन्माष्टमी की रात्रि को प्रारम्भ किया जा सकता है। यह साधना किसी भी रविवार को भी प्रारम्भ की जा सकती है।
2. जन्माष्टमी की रात्रि को या किसी भी रविवार को रात्रि दस बजे के उपरांत स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठना चाहिए।
3.
4. फिर अपने सामने सफेद वस्त्र से ढके बाजोट पर 'सूर्य सम्मोहन यंत्र' स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन करें और उसके पास ही 'मालिणक्य माला' को स्थापित कर उसका भी पूजन करें।
4. शुद्ध घी का दीपक लगायें। फिर इसी माला से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें-

मंत्र-।। ॐ ह्रीं सूर्य सम्मोहय ह्रीं ॐ।।

5. 11 दिन बाद यंत्र और माला को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। साधना के दौरान प्रतिदिन इसी मंत्र के द्वारा उगते सूर्य को जल चढ़ाना चाहिए।
6. ऐसा करने से साधना पूर्ण होती है और साधक को अपने व्यक्तित्व में आश्चर्यजनक परिवर्तन अनुभव होता है। उसमें गजब का आकर्षण एवं सम्मोहन आ जाता है और वह प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है। सभी जड़-चेतन पदार्थ उसके प्रति आकर्षित हो जाते हैं और सदैव उसके अनुकूल रह सकते हैं।

इस साधना को संपन्न कर आप स्वयं अनुभव करेंगे, कि ये कितनी अद्धितीय हैं व कितनी श्रेष्ठ हैं।

साधना सामग्री न्यौछावर 1151 रू.

8. इच्छापूर्ति गोविन्द प्रयोग-

यह साधना प्रयोग विशेष रूप से इच्छापूर्ति के लिये किया जाता है। भगवान गोविन्द से जो कुछ भी सच्चे हृदय से मांगा जाता है वे उसे प्रदान कर देते हैं। आवश्यकता है पूर्ण श्रद्धा भाव से मांगने की। और विशेष रूप से यदि यह प्रयोग सम्पन्न किया जाये तो भगवन प्रसन्न हो सर्वस्व प्रदान करते हैं।

साधना विधान-

1. यह साधना जन्माष्टमी की रात्रि को या फिर किसी भी शुक्रवार की रात्रि के प्रथम प्रहर में प्रारम्भ की जा सकती है।
2. इस साधना हेतु साधक शुक्रवार रात्रि का प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात् साधना क्रम प्रारंभ कर अर्द्धरात्रि के साथ पूर्ण मंत्र जप संपन्न करना चाहिये।
3. इस साधना हेतु 'कामनापूर्ति यंत्र' तथा 'दो हकीक' की आवश्यकता है।
4. स्नान आदि कर स्वच्छ हो लें तथा स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
5. अपने सामने बाजोट पर कपड़ा बिछा कर उस पर पुष्प बिछा दें और उन पुष्पों के बीचों बीच 'कामनापूर्ति यंत्र' स्थापित करें।
6. अब इस यंत्र का पूजन केवल चंदन तथा केसर से ही संपन्न करें।
7. अपने सामने कृष्ण का एक सुंदर चित्र फ्रेम में मढ़कर स्थापित करें, चित्र पर तिलक करें तथा प्रसाद स्वरूप पंचामृत हो, जिसमें घी, दूध, दही, शक्कर तथा शहद हो।
8. इसके अतिरिक्त अन्य नैवेद्य भी अर्पित कर सकते हैं, कामनापूर्ति यंत्र के दोनों ओर तथा 'हकीक' पर केसर टीका लगायें और दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण भगवान का ध्यान करें।
9. कृष्ण का ध्यान कर इनके शक्ति स्वरूप आठ विग्रह स्थापित करें, ये आठ शक्तियां लक्ष्मी, सरस्वती, रति, प्रीति, कीर्ति, कान्ति, तुष्टि एवं पुष्टि है। प्रत्येक शक्ति विग्रह को स्थापित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ लक्ष्म्यै नमः पूर्वदले, ॐ सरस्वत्यै नमः आग्नेय दले, ॐ रत्यै नमः, दक्षिणदले, ॐ प्रीत्यै नमः नैर्ऋत्यदले, ॐ कीर्त्यै नमः पश्चिम दले, ॐ कान्त्यै नमः वायव्यदले, ॐ तुष्टयै नमः उत्तरदले, ॐ पुष्टयै नमः ईशान दले।

शक्ति पूजन के पश्चात् इच्छा पूर्ति मंत्र का जप प्रारंभ किया जाता है, इसकी भी विशेष विधि है, इसमें अपने दोनों हाथों में एक पुष्प अथवा पुष्प की पंखुड़ी लें, और इच्छा पूर्ति मंत्र का उच्चारण करते हुए उसे अर्पित कर दें।

।। ॐ श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय ह्रीं ॐ स्वाहा।।

इस प्रकार 108 बार यह मंत्र उच्चारण इसी विधि से संपन्न करना है। यह अर्पण प्रयोग पूर्ण हो जाने के पश्चात् पहले से जला कर रखे हुए दीप, अगरबत्ती तथा धूप से आरती संपन्न कर प्रसाद ग्रहण करें।

यदि साधक एक महीने तक प्रतिदिन एक माला मंत्र जप संपन्न करें, तो उसका इच्छित कार्य अवश्य ही संपन्न हो सकता है इसमें संशय नहीं।

साधना सामग्री न्यौछावर 1151 रू.

9. बल वृद्धि महाबाहु प्रयोग-

संसार में शक्तिहीन हो करके जीना दुर्भाग्य का पर्याय है, चाहे वह समाज में हो या परिवार में हो उसका निरन्तर तिरस्कार होता है क्योंकि शक्तिहीन व्यक्ति का भाग्य भी साथ नहीं देता। दैवो दुर्बल घातकः इस युक्ति के अनुसार कमजोर होना एक शाप है इसलिए शारीरिक शक्ति से, विद्या शक्ति से, धन शक्ति से और जन शक्ति से हमें संपन्न होने का निरन्तर प्रयास करना चाहिए। जिससे समाज में, परिवार में या विश्व में मस्तक ऊँचा करके सम्मानपूर्वक जी सकें क्योंकि शक्तिहीन होकर तिल-तिल जीने के बजाय शक्ति संपन्न बनकर कुछ दिन जीना ही श्रेष्ठ है। यदि किसी कारणवश आप शारीरिक शक्ति से रहित है, कमजोर हैं, बलहीन हैं और अपमान की निरन्तर यदि संभावना बनी रहती है उस स्थिति में इस प्रयोग को अवश्य करना चाहिए जिससे आपका जीवन उदात्त और सुखमय बन सके।

साधना विधान-

1. यह साधना जन्माष्टमी की रात्रि को विशेष रूप से सम्पन्न करें। आप चाहें तो किसी भी पूर्णमासी या शनिवार की रात्रि को भी सम्पन्न कर सकते हैं।
2. जन्माष्टमी के दिन रात्रि 9.30 के बाद साधना संपन्न करें।
3. स्नान आदि कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
4. पूर्व दिशा की ओर मुख करके कपड़े के आसन पर बैठें।
5. अपने सामने बाजोट रख लें तथा उस पर एक लाल कपड़ा बिछायें।
6. अब बाजोट पर एक थाली स्थापित करें तथा उसमें चावल से स्वस्तिक बनाकर उसमें 'बलबाहु नृसिंह यंत्र' स्थापित करें।
7. यंत्र की चारों दिशा में 'चार ऊर्जास्वित् गुटिकाएं' स्थापित कर दें। उसके बाद यंत्र और गुटिकाओं पर निम्न मंत्र बोलते हुए जल का छींटा दें।

   ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा वस्थां गतोपि वा।
   य स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।
8. इसके बाद यंत्र के मध्य में तथा चारों गुटिकाओं पर केशर या अष्टगंध का तिलक करें तथा धूप दीप दिखाकर पुष्प चढ़ावें।
9. साधना काल तक शुद्ध घी का दीपक और अगरबत्ती जलते रहना चाहिए।
10. साधना शुरू करने से पूर्व गुरू पूजन और गुरू मंत्र जप अवश्य करना चाहिए, इसके बाद निम्न मंत्र का लाल हकीक माला से 11 माला मंत्र जप करें।

    ।। ॐ निं नृसिंहाय बलदाय महाबाहवे ह्रीं ॐ फट्।।
11. यह 11 दिन की साधना है, साधना समाप्ति के बाद गुटिकाओं को तथा माला को जल में प्रवाहित करें।
12. यंत्र को अपने पूजा स्थान में लाल कपड़े में बांधकर 21 दिन स्थापित करें और 21 दिन तक उसके सामने धूप या अगरबत्ती जलावें। बाद में इसे भी जल में प्रवाहित करें।

यह बल प्राप्ति का अद्भुत प्रयोग है। शारीरिक बल, वीर्य, ओज, तेज, कायाकल्प प्रदान करने के साथ-साथ अस्वस्थता को पूर्ण रूप से समाप्त करने के लिए यह अत्यंत श्रेष्ठ साधना है।

स्वस्थ देह, स्वस्थ मन और स्वस्थ मन से गुरू चिंतन, गुरू चिंतन के साथ योगेश्वर कृष्ण चिंतन यही जीवन का आधार होना चाहिए।

साधना सामग्री न्यौछावर 1151 रू.

नोट : सभी साधनाएँ एवं प्रयोग आपकी श्रद्धा, भक्ति एवं विश्वास से ही फलीभूत होंगे। मात्र आजमाने के लिये किये गये प्रयोग आपको सार्थक परिणाम नहीं दें पायेंगे। अतः पूर्ण श्रद्धा भाव से ही इन्हें सम्पन्न करें।

♦♦♦

दाम्पत्य सुख शान्ति पैकेट

कहा जाता है कि इस पृथ्वी पर भी व्यक्ति चाहे तो स्वर्ग सा जीवन बिता सकता है। लेकिन स्वर्ग सा जीवन जीने और बिताने के लिये सबसे बड़ी आवश्यकता होती है पारिवारिक सुख की। पारिवारिक सुख यानी की आपका दाम्पत्य जीवन। यदि व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं है तो फिर उसके पास सबकुछ होते हुए भी कुछ भी नहीं है। दाम्पत्य सुख का सम्बन्ध अमीरी या गरीबी से नहीं है। गरीब व्यक्ति भी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सुखपूर्वक रहकर अत्यन्त सुख और आनन्द की अनुभूति करता है वहीं कोई धनवान व्यक्ति सर्वस्व भौतिक सुख सुविधाओं के होते हुए भी पत्नी और बच्चों के साथ सम्बन्ध अच्छे ना होने पर दुःखी जीवन व्यतीत करता है। इसीलिये कहा गया है कि जो व्यक्ति अपने घर में सुखी है वह संसार में सुखी है और जो व्यक्ति घर में दुःखी है उसके लिए सारा संसार बेगाना है। देखा जाये तो आज के समय में वे ही लोग भाग्यशाली हैं जो दाम्पत्य जीवन के सुख को भोग रहे हैं अन्यथा जगह-जगह लोग गृहक्लेश की पीड़ा झेल रहे हैं। किसी की पत्नी सही नहीं है तो किसी के बच्चे कहने पर नहीं है, किसी की अपने पिता से नहीं बनती तो किसी के माता से मतभेद हैं। यदि आप अपने जीवन में दाम्पत्य सुख का पूर्ण लुत्फ उठाना चाहते हैं तो स्थापित कीजिए दाम्पत्य सुख शांति पैकेट और बना लीजिए अपने घर-संसार को स्वर्ग सा सुंदर।

1. क्या आपका दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं है?
2. क्या आप दोनों के बीच वैचारिक मतभेद है?
3. क्या आप गृह क्लेश की पीड़ा झेल रहे हैं?
4. क्या परिवार में अशान्ति का वातावरण है?
5. आपकी पत्नी या पति कहा नहीं मानते हैं?

आप भी उपरोक्त समस्याओं से त्रस्त हैं तो यह पैकेट आपके लिये विशेष उपयोगी है–

इस पैकेट में आप निम्न सामग्री पायेंगे– 1. मातंगी यंत्र 2. आम की लकड़ी का स्वास्तिक 3. जप माला 4.देवी यंत्र पैण्डल 5.मनसा वाचा पिरामिड 6.वास्तु यंत्र 7.सम्पूर्ण विधि

न्यौछावर मात्र 3500 रुपये

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org